किसान-कुसुमावली

खेती की कहावतें

लेखक
श्रीयुत 'व्यथितहृदय'

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
३६, लाटूश रोड
लखनऊ

प्रथमावृत्ति] सं० २००२ वि० [सादी ॥=)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

अन्य प्राप्ति-स्थान—

१. दिल्ली-ग्रंथागार, चर्खेवालाँ, दिल्ली
२. प्रयाग-ग्रंथागार, ४०, क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद
३. काशी-ग्रंथागार, मच्छोदरी-पार्क, काशी
४. लखनऊ-ग्रंथागार, लखनऊ
५. साहित्य-रत्न-भंडार, सिविल लाइंस, आगरा
६. हिंदी-भवन, अस्पताल-रोड, लाहौर
७. एन्० एम्० भटनागर ऍंड ब्रादर्स, उदयपुर
८. दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मदरास

नोट—हमारी सब पुस्तकें इनके अलावा हिंदुस्थान-भर के सब प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें। हम उनके यहाँ भी मिलने का प्रबंध करेंगे। हिंदी-सेवा में हमारा हाथ बँटाइए।

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

परिचय

हिंदुस्थान एक खेतिहर देश है। यहाँ के ज्यादातर आदमी खेती करके ही अपनी जिंदगी बिताते हैं। इसलिये खेती-संबंधी जितना भी अधिक साहित्य इस देश में लिखा जाय, उतना ही अच्छा है। इसमें संदेह नहीं कि जिन लोगों का ध्यान खेती से संबंध रखनेवाले साहित्य की ओर खिंचेगा, वे खेती की कहावतों को भी एक बार टटोलने और खोजने की कोशिश अवश्य करेंगे। इसका कारण यह है कि इस देश के सभी सूबों में खेती की कहावतें प्रचलित हैं, और कही जाती हैं। गाँवों में रहनेवाले अधिकांश किसान खेती की कहावतों को अपनी जुबान पर भी रखते हैं। यदि कोई गाँवों में घूम-घूमकर उन कहावतों को संग्रह करे, तो मैं समझता हूँ कि एक बहुत बड़ा उपयोगी ग्रंथ तैयार हो जाय। गाँवों में जो कहावतें कही जाती हैं, उनमें एक तरह की सचाई और अनुभव पाया जाता है। वे जिस चीज को लक्ष्य करके कही जाती हैं, इसमें संदेह नहीं कि उन पर पूरी-पूरी उतरती हैं। खेती के संबंध में कही जानेवाली कहावतें तो अपना अधिक मूल्य रखती हैं। मेरा तो उन कहावतों के संबंध में यहाँ तक कहना है कि वे खेती का ज्ञान-शास्त्र हैं, उनमें खेती का एक अनुभव-युक्त ज्ञान छिपा हुआ है। यदि ये कहावतें छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में देहातों में बँटवा दी जायँ, तो किसानों का बहुत कुछ लाभ हो सकता है।

खेती से संबंध रखनेवाली जो कहावतें कही जाती हैं,

उनमें अधिकांश कहावतें घाघ, भड्डरी, सुंदर और टाउन इत्यादि की कही हुई हैं। कुछ कहावतें दूसरे लोगों की भी कही हुई हैं। घाघ और भड्डरी के नाम पर कुछ कहावतें कल्पित भी बना ली गई हैं। इन कहावतों में यह निर्णय करना कि कौन किसकी हैं, बहुत कठिन है। इस प्रश्न को हल करना इस पुस्तिका का उद्देश्य भी नहीं है। इसका उद्देश्य तो केवल इतना ही है कि खेती से संबंध रखनेवाली इन कहावतों का, जिनमें खेती का ज्ञान भरा हुआ है, गाँवों में प्रचार हो। गाँववाले इन कहावतों को पढ़ें और उससे लाभ उठाएँ।

खेती की कहावतें अधिक संख्या में प्रचलित हैं, और गाँवों में विभिन्न रूपों में कही जाती हैं। सभी कहावतों का संग्रह करना तो एक प्रकार से कठिनता है। फिर भी इस छोटी-सी पुस्तिका में खेती की उपयोगी कहावतों को संग्रह करने का प्रबंध किया गया है। वर्षा, अकाल, खाद, जुताई, बीज, बोवाई और हवा के रुख पर जितनी उपयोगी, सरल और अच्छी कहावतें मिल सकती हैं, उन्हें इसमें स्थान दिया गया है। इन कहावतों के संग्रह करने में कई पुस्तकों और पुस्तिकाओं से सहायता ली गई है। 'मनोरमा' इत्यादि मासिक पत्रिका की पुरानी फाइलों से भी बहुत कुछ काम निकलता है। इसलिये मैं इन सबका अत्यंत अनुगृहीत हूँ।

लेखक

निवेदन

इस पुस्तक में किसानों के लिये १० शीर्षकों के अंतर्गत अनेकों उपयोगी उत्तमोत्तम कहावतों का संग्रह किया गया है। आशा है, कृषक-वर्ग इसे अपनाकर इस पुस्तिका का यथेष्ट आदर करेगा।

आशा है, हमारी लोक-प्रिय केंद्रीय और प्रांतीय सरकार इस पुस्तिका को अपनाएँगी तथा हमारे किसान भाइयों को भी इससे लाभ पहुँचेगा।

कवि-कुटीर
लखनऊ } प्रकाशक

सूची

१. वर्षा

१. हस्त के बरसे तीन हों—साली, सक्कर, मास ;
हस्त के बरसे जाये—तिल, कोदों औ' कपास।

२. हथिया पूँछ डोलावै, घर बैठे गोहूँ आवै।

३. सूकबार की बादरी रहे सनीचर छाय ;
कहे घाघ सुनु घाघिनी, बिन बरसे नहिं जाय।

४. सिंहा गरजै, हथिया लरजै।

५. हथिया बरसै, चित्रा मँडराय,
घर बैठे किसान रिरियाय।

६. मघा भुईं अघा।

७. मेघ जो बरसै स्वाति, चरखा चलै न बोलै ताँति।

८. पूरब धनुही, पच्छिम भान; घाघ कहै बरखा नियरान।

९. मग्घ गरजै, हस्त लरजै।

१०. साँझै धनुष, सकारे मोरा; नहीं बहुत, तो थोरै थोरा।

११. दिन का बादर, सूम का आदर।

१२. धनुष पड़ै बंगाली ; मेहै साँझ-सकाली।

१३. जब बरसै, तब बाँधो कयारी ;
पुरा किसान को हाथ कुदारी।

१४. पूरब के बादल पछुवा को जायँ,
पतली पकावै, मोटी पकाव ;
पछुवा के बादल पुरवा को जायँ,
मोटी पकावै, पतली पकाव ।

१५. ढेले पर जब चील्ह बोलै, गली-गली में पानी डोलै ।

१६. कलसै पानी हो गरम, चिड़ी नहावै धूर ;
अंडा ले चिउँटी चढ़ै, तो बरखा भरपूर ।

१७. काला बादर डेरावना, भूरा बरसनहार ।

१८. गरभै ऊगे का भयो, जो गरज्यो अधिरात ;
तुम जैयो पिय मालवा, हम जैहैं गुजरात ।

१९. चमकै पच्छिम उत्तर ओर,
नित जानो पानी है जोर ।

२०. जब बरसेगा उत्तरा, नाज न खावै कुत्तरा ।

२१. कर्क में मंगल होय भवानी, दैव धूल बरसेंगे पानी ।

२२. उत्तर चमकै बीजरी, पूरब बहै जु बाउ ;
घाघ कहै सुनु भड्डरी, बरधा भीतर लाउ ।

२३. इंद्र-धनुष जो पूरब देखी,
नीच-ऊँच थल एकै लेखी ।
साँझ धनुष, बिहाने पानी,
कहै घाघ सुन पंडित ज्ञानी ।

२४. अद्रा, भरनी, रोहिनी, मघा, उत्तरा तीन,
आन मंगल आँधी चलै, तब लौं बरखा छीन।

२५. अद्र चौथ, मग्घ पंचक।

२६. माघ में बादर लाल धरै,
तब जानो सच पाथर परै।

२७. पूस-मास दसवीं अँधियारी,
बदरी होय घोर अँधकारी।
काहे पंडित पढ़ि-पढ़ि मरौ,
पूस-अमावस की सुधि करौ।

२८. माघ बदी आठै दिन दरसै,
तो मग्घा-भर सावन बरसै।

२९. पूस अँधेरी तेरसी, चहुँदिसि बादर होय;
सावन पूनो मावसे जल धरनी में होय।

३०. सावन रख में मेह बरसे भादों जाड़।

३१. भूलो बावल फिरै गँवारा कातिक माँगै मेह।

३२. पूस-मास दसवीं अँधियारी,
बदली घोर होय अँधकारी।
सावन बदि दसमी दिन आय,
भरे मेघ चौहदि बरसाय।

३३. बिन भादों के बरसे, बिन माता के परसे।

३४. पानी बरसै आधा पूस, आधा गोहूँ, आधा भूस।

३५. सावन सुकला सत्तिमी, छिपिके ऊगै भानु,
तब लगि देव बरीसिहैं, जब लगि देव-उठानु।

३६. सावन बदी एकादसी बादर ऊगै सूर,
तो बतरावै भड्डरी, घर-घर बाजै तूर।

३७. सावन पहिली पंचमी गरम उदै जो भानु,
बरखा होगी अति घनी, ऊँचे जानो धान।

३८. सावन पहिली चौथ में जो मेघा बरसाय,
तो भाखै यों भड्डरी, साख सवाई जाय।

३९. सुदि असाढ़ की पंचमी गज धमधम्मा होय,
तो यों जानो भड्डरी, मधुरा मेघा जोय।

४०. एक बूंद चैत माँ परै, सहस बूँद सावन में हरै।

४१. जै दिन जेठ चलै पुरवाई,
तै दिन सावन सूखा लाई।

४२. आसाढ़ी पूनो दिना गाज बीज बरसंत,
भाषै लच्छन कालिका, आनँद मानो संत।

४३. चैत-मास जो बीज भिजोए,
भर बैसाखहिं टेसू धोए।
जेठ-मास जो तपै निरासा,
तो जानौ बरखा की आसा।

४४. असाढ़-मास पूनो दिवस बादर घेरै चंद,
तो भडरी जोसी कहै, होवै परमानंद।

४५. रोहिनि जो बरसा करै, बचै जेठ नित मूल,
घाघ कहै सुन भड्डरी, लागै तीनो तूल।

४६. साँझ के धनुष, सबेरे कै मोरा;
यह देखो मेघन के रोरा।
साँझै धनुष, सकारे मोरा,
ये दोनो पानी के बोरा।

४७. मोरपंख बादर उठैं, रंडा काजर-रेख,
वह बरसै, यह घर करै, यहि मा नाहीं मेख।

४८. मघा नखत बरसै असरार,
क्वारे अगिया, माह तुसार।

४९. मघा के बरसे। माता के परसे।

५०. मृगसिर वायु न बादरा, रोहिन तपै न जेठ,
अद्रा जो बरसै नहीं, सहै कौन अलसेठ।

५१. पानी, बरसे बहन न पावै,
तब खेती को मजा दिखावै।

५२. तपै मृगसिरा जोई, तब पूरब बरसा होई।

५३. जो कहुँ पुरवा पानी देवै,
जिनसे सबको कीड़े खोवै।

५४. पुरना पूनो गरजै, दिना बहत्तर बरसै।

५५. कहा भयो पुरवा कुदिन, कहा असाढ़ी मूल;
आसाढ़ी घन गर्जओ, उपजै सातो तूल।

५६. क्या रोहिनि बरसा करै, बचै जेठ नित मूल ;
एक बूँद कृतिका परै, नासै तीनो तूल ।

५७. चढ़तै बरसै आदरा, उतरत बरसै हस्त ;
कितनौ राजा डाँड़ ले, सुखी रहै गिरहस्त ।

५८. चित्रा बरसै माटी मारे, आगे से गेरुई के कारे ।

५९. एक पानी जो बरसै स्वाती,
कुर्मी पहनै सोने की पाती ।

६०. उत्तर उत्तर दै गये, हस्त गए मुख मोरि ;
आए समया फिर मिले, चीत न मिले बहोरि ।

६१. आवत नहिं आदर लिए, जात न दीन्हे हस्त ,
ये दोनो पछतायँगे, पाहुन औ' गिरहस्त ।

६२. उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै,
बरषा होय भूमि जल बढ़ै ।

६३. अद्रा बरसे पुनर्बसु जाय,
दीन अन्न कोऊ ना खाय ।

६४. पूस अँधेरी सत्तिमी, भिन-भिन बादर होय ,
सावन सुदि पुनवासी, बरसा अच्छी होय ।

६५. पूस उजेरी सत्तिमी, अष्टमि, नौमी गाज ,
मेघ होय, तो जानि लो, अब सुभ होइहैं काज ।

६६. माघ-मास में बोवो गोई ,
फिर बैसाख में तमसो धोई ।

६७. जेठ-मास जो तपै निरासा,
तो जानो बरसा की आसा।

६८. पूस-मास की सत्तिमी जो पानी नहिं देय,
अद्रा फिर बरसै सही, जल-थल एक करेय।

६९. अगहन बरसै, बूढ़ बियाय,
तौनै देस रसातल जाय।

७०. सावन-मास बहै पुरवाई,
बरदा बेचि लिहा धेनुगाई।

७१. भादों मासै ऊजरी, लखौ मूल रविवार,
तो यों भाखै भड्डरी, सखी भली नरहार।

७२. धनि वह राजा, धनि वह देस,
जहवाँ बरसै अगहन सेस।
पूस में दूना, माघ सवाई,
फागुन बरसै घरौ से जाई।

७३. सावन कृष्ण एकादसी, जेती रोहिनि होय,
तेतो समया जानियो, खरी इम जनि कोय।

७४. सावन पहिले पाख में दसमी रोहिनि होय,
महँगा नाज औ' स्वल्प जल बिरला बिलसै कोय।

७५. सावन केरे प्रथम दिन उगत न दीखै भान,
चार महीना बरसै पानी याको है परमान।

७६. धूर असाढ़ी बीजुरी, चमक निरंतर जोय,
सोम, सुक्र औ' गुरु परै, भारी बरसा होय।

७७. असाढ़-मास आठैं अँधियारी,
जो निकरै चंदा जलधारी।
चंदा निकरै बादर फोर,
साढ़े तीन मास वर्षा का जोर।

७८. जेठ अंत तिथि रात में रहै मेघ जो छाय,
कहै घाघ तेहि साल में जल दे भूमि बहाय।

७९. बायू में जब बायु समाय,
कहैं घाघ, जल कहाँ समाय।

८०. मघा के बरसे मन हुलसाय,
पानी के बरसे भिमी अघाय।

२. वायु

१. पुरवाई बहुतै बहै, बिधवा पान चबाय ;
ऊ ले आवे नीर को, ई काहू सँग जाय।

२. पुरवा में जो पछिया बहै,
हँसिकै नारि पुरुस से कहै।
ऊ बरसै ई करै भतार,
घाघ कहै यह सगुन बिचार।

३. प्रथम बयार पुरुवा की लीजै,
ऊँचे आन महज़र कीजै।
पच्छिम ब्यार चलै मरदाना,
सींचो खेतै आप किसाना।

४. बायु चलै ईसान, तो खाना खाय किसान।

५. सब दिन बरसै दखिना बाय,
कभी न बरसै बरखा पाय।

६. एक बयार बहै जो ऊता, मेंड से पानी पीयो पूता।

७. जब घूटै दक्खिन से हल्ला,
सूख जाय सागर औ' तल्ला।

८. दक्खिन घेरे पुरवा बरसै,
पछिया चलते किसान तरसै।

९. पछिवाँ आई बादरी, राँड़ कुसुंबी जाय ;
यह बरसै, वह घर करै, उनको यही सुभाय।

१०. जब पवन चलै पुरवाई,
तो बादर काटि लगाई।

११. सावन पहिली पंचमी जोर कि चलै बयार,
तुम जाना पिय मालवा, हम जावें पितुसार।

१२. भादों जै दिन पश्छिम बयार,
तै दिन माघै पड़ै तुसार।

१३. माघै - पूसै बह पुरवाई,
तब सरसों कह माहो खाई।

१४. माघ - पूस दक्खिन चलै,
तो सावन के लच्छन करै।

१५. अंबाझोर चलै पुरवाई,
तब जानो वर्षा - ऋतु आई।

१६. जब जेठ चलै पुरवाई,
तब सावन धूल उड़ाई।

१७. सावन के मुख पच्छिमा,
यह है समय कि लच्छिमा।

१८. बयार चलै ईसाना,
ऊँची खेती करौ किसाना।

१९. पूरब औ' छन पच्छिम चलै,
रॉड़ बतकही हँसके करै।
ऊ बरसै ई करै भतार,
भद्र के मन में यही बिचार।

२०. पुरवाई कट्टर चलै, रॉड़ मूड़ से न्हाय,
वह लै आवै बादरी, यह कोऊ लै जाय।

२१. पहिले पवन पुरुब से आवै,
बरसै मेघ, अन्न सरसावै।

२२. पछिवाँ हवा ओसावै जोई,
कहै घाघ घुन कबहुँ न होई।

२३. दिन सात चलै जो बाँदा,
सूखै जल सातों खाँड़ा।

२४. जो पुरवा पुरवाई पावै,
सूखी नदिया नाव चलावै।

२५. छिन पुरवैया, छिन पछियाव,
छिन-छिन बहै बबूला बाव।
बादर ऊपर बादर धावै,
तब भड्डर पानी बरसावै।

२६. फागुन-मास बहै पुरवाई,
तब गोहूँ माँ गेरुई धाई।

२७. दखिनी कुलखिनी, माह-पूस सुलखिनी।
माघ-पूस में दखिना, भले मेह को लखना।

२८. पूस बदी दसमी दिवस बादर चमके बीज,
तो बरसै भर भादों, साधो खेलो तीज।

२९. सावन में पुरवइया, भादों में पछियाव,
हरवाहे हर छोड़ दे, लड़िका जाय जिआव।

३०. सावन पछिया, भादों पुरवा, आसिन बहै इसान,
कातिक कंता सींक न डोलै, गाजैं सबै किसान।

३. अकाल

१. सटका मघा, पटकिगा ऊसर ;
दूध-भात माँ परिगा मूसर।

२. रात में बोले काकल, दिन में बोले स्याल ,
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै पड़ै अकाल।

३. पुष्य पुनर्बस भरे न ताल ,
सो फिर भरिहैं अगले साल।

४. दिन को बादर, रात में चंदर ;
बहै पुरवैया भद्दर - भद्दर ;
कहै भड्डरी बरसा नाहीं ,
सिगरी खेती जाइ सुखाहीं।

५. दिन को बद्दर, रात निबद्दर ,
बहै पुरवैया झब्बर - झब्बर।
घाघ कहैं कुछ होनी होई ,
कुआँ से पानी धोबी धोई।

६. चित्रा, स्वाति बिसेस्वरी जो बरसै आसाढ़ ,
चलो पिया परदेस अब, भारी परि है काल।

७. उगे अगस्त, फूले बन कासा,
ना रखिए बरखा की आसा।

८. अद्रा जो बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय,
भाखै ऐसा भड्डरी, बरखा बूँद न होय।

९. पाँच मंगल हों फागुनो, पूस पाँच सनि होय,
काल परै कह भड्डरी, बीज बोवो मति कोय।

१०. कतिक मावस देखै जोसी,
रबि, सनि, भौमबार जो होसी।
स्वाती नखत और पुखयोग,
काल परै औ' नासै लोग।

११. भादों मासे कजरी, लखौ मूल रबिवार,
तो यों भाखै भड्डरी सुखा भली निरधार।

१२. सावन सुकुला सत्तिमी उभरे निकलेभान,
हम जावें पिय माइके, तुम कर लो गुजरान।

१३. सावन सुकुला सत्तिमी चंदा छिटक करे,
की जल देखै कूप में, की कामिनि-सीस धरे।

१४. सावन सूखा स्यारी, भादों सूखा उनहारी।

१५. सुदी असाढ़ी बुधा को उदय भयो जो देख,
सुक्रहिं औ' सावन लखो महाकाल अब ऐख।

१६. कृष्णा असाढ़ी प्रतिपदा जो उत्तर गरजंत,
स्नास्त्री तो यों भाखहीं, निश्चय काल पड़ंत।

१७. चैत मास उजाले पाख,
अठवें दिवस बरसता राख।
नवें दिवस जब बिजुली होवे,
देसै काल हलाहल होवे।

१८. लाल-पियर जब होय अकास,
तब नाहीं बरसा की आस।

१९. मंगल पड़े तबाही, बुध के पड़े अकाल,
जो अंत होय सनीचरी, निश्चय परिहै काल।

२०. दिवस बादरा, रात को तारे,
चलो कंत जहँ जीवें बारे।

२१. दिन को बादर, रात तरैया,
ये नारायन काह करैया।

२२. जब बहै हड़हवा कोन,
तब बनजारो लादै नोन।

२३. काहे पंडित पढ़ि पढ़ि मरौ,
पूस-अमावस की सुधि करौ।

२४. आगे मंगल, पीछे भान,
बरखा होवे ओस समान।
आगे मेघा, पीछे भान,
पानी-पानी रटै किसान।

२५. माघ क ऊक्खम, जेठ क जाड़,

पहिले बरखा भर गए गाड़।
कहैं घाघ हम होइब जोगी,
कुआँ के पानी धोइहैं धोबी।

२६. भादों बदी एकादसी जो ना छिटकै मेघ,
चार मास बरसै नहीं अस भाखै सहदेव।

२७. सावन सुकला सत्तिमी उगत जो देखे भान,
या जल मिलिहै कूप में, या गंगा असनान।

२८. सावन सुक्कला सत्तिमी गगन स्वच्छ जो होय,
कहैं घाघ सुनु घाघिनी पुहुमी खेती खोय।

२९. धुर असाढ़ की अष्टमी ससि निर्मल जो दीख,
पीय जायकै मालवा माँगत फिरिहैं भीख।

३०. नवीं असाढ़ी बादरी जो गरजै घनघोर,
कहैं भड्डरी जोतसी, काल परै चँहु ओर।

३१. जेठ बदी दसमी दिना जो होवे शनिवार,
पानी होय न धरनि में, होवे हाहाकार।

---

४. बैल

१. मुँह का मोट, माथ का महुवा ;
इन्हें देखि जनि भूल्यो रहुवा ।
अमहा जबहा जोतहु जाय ;
भीख माँगिके जाहु बिलाय ।

२. वह किसान है बातर ,
जो बरधा राखै गादर ।

३. सात दाँत उदंत को रंग जो कारो होय ;
इन्हें कबहुँ ना लीजिए, दाम चहे जो होय ।

४- सींग मुड़े, माथा उठा, मुँह का होवै गोल ,
रोम नरम, चंचल करन, तेज बैल अनमोल ।

५. हिरन मुतान औ' पतली पूँछ ;
बैल बेसाहो कंत बेपूँछ ।

६. बाँधा बछड़ा जाय मठाय ;
बैठा ज्वान जाय तुँदियाय ।

७. बिन बैलन खेती करै, बिन भइयन के रार ;
बिनमहेराम घर करै, चौदह साख लबार ।

८. बैल चौकना जोत में औ' चमकीली नार ;
ये बैरी हैं जान के, लाज रखै करतार ।

९. बैल बगोदा निरधन जोय,
वा घर उरहन कबहुँ न होय।
बैल मरखना, चमकुल जोय,
वा घर उरहन नित उठि होय।

१०. बैल लीजै कजरा, दाम दीजै अगरा।

११. मत कोई लीजे मुसरहा बाहन;
खसम मार के डाले पाहन।

१२. बरध बगोदा मरकहा होय,
वा घर उरहन नित-नित होय।

१३. फेंट बधीला, देह गठीला, आँखों का चमकीला;
भाखैं नानकचंद मर्द है बर्ध कंध का नीला।

१४. परहर काला खीरो नीला, कनवरिया हो लाल;
धौले कोखी नागौरी के, नानक कौन मिसाल।

१५. नीले कंधा, बैंगन खुरा;
कबहुँ न निकले कंथा बुरा।

१६. ना मोहिं नाथो डलिया-कुलिया,
ना मोहिं नाथो दाएँ;
बीस बरस तक करौ बरधई,
जोगा मिलिहैं गाएँ।

१७. दाँत गिरे औ' खुर घिसे, पीठ बोझ नहिं लेय;
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय?

१८. जहाँ परे फुलवा की लार ;
झाड़ू लेके बुहारो सार ।

१९. डग-डग डोलन मर का चालन ,
कहाँ चलवला बाँड़ा ;
पहिले खइहा रान परोसी ,
गोसयों के मत छाँड़ा ।

२०. छोटे सींग औ' छोटी पूँछ ,
ऐसे को ले लो बे पूँछ ।

२१. चरक मरौती माथ में महुआ ,
इन्हें देखि जनि भूल्यो रहुआ ।
दाम परे तो आधे तेरे ,
नहिं रुपया पानो में परे ।

२२. करिया काछी, धौरा बान ,
इन्हें छोड़ि जनि बेसहो आन ।
कार कछौती सुनरे बान ,
इन्हें छाँड़ि जिन बेसहो आन ।

२३. एक बात तुम सुनो हमारी ,
बूढ़ बैल से भली कुदारी ।

२४. उजर बेगौनी, मुँह का महुआ ,
वाहि देखि हरवाहा रोआ ।

२५. स्वेत रंडा और पीठ वरारी,
ताहि देखि जनि भूल्यो लारी।

२६. सींग गिरौला बरध के औ' मनई का कोढ़,
यह नीके ना होयँगे, चाहे बद लो होड़।

२७. संथर जोते, पूत चरावे,
लगते जेठ भुसौला छावे।
भादों मास उठे जो गरदा,
बीस बरस तक जोतो बरधा।

२८. लंबे-लंबे कान और ढीला मुतान,
छोड़ो-छोड़ो किसान न तो जात हैं प्रान।

२९. मियानी बैल बड़ो बलवान,
तनिक में करिहै ठाढ़े कान।

३०. भैंसा बरध की खेती करै,
करजा काढ़ि बिरानो खाय।
बधिया ऐंचत है एहरी को,
भैंसा ओहरै को लै जाय।

३१. बैल बिसाहन जाओ कन्ता,
भूरे का मत देखो दन्ता।

३२. बैल तरकना, टूटी नाव;
ये काहू दिन दीहैं दाव।

३३. बूढ़ा बैल बिसाहे, झिन्ना कपड़ा लेय ;
आपुन करे नमौनी, दैवै दूसन देय ।

३४. बाँमड़ सुबुक और मुहुँ घौरा ,
इन्हें देखि चरवाहा रौरा ।

३५. बरद मुसरहा जो कोइ ले ,
राजभंग पल में कर दे ।
त्रिया-बाल सब कुछ छुट जाय ,
भीख माँग के घर-घर खाय ।

३६. बरध बिसाहन जाओ कन्ता ,
कुबरा का मत देखो दन्ता ।
घोंची देखे वह पार ,
थैली खोलै यह पार ।

३७. बड़ सिंगा जनि लीजै मोल ,
कुएँ में डालो रुपया खोल ।

३८. पूँछ झिया औ' छोटे कान ,
ऐसे बरध मिहनती जान ।

३९. पतरी पिडुंरी, मोटी रान ;
पूँछ होय भुइं में तरियान ।
जाके होवे ऐसी गोई ,
वाको तकै और सब कोई ।

४०. नटिया बरध छोकरा हारी,
दूब कहै मोर काह उखारी।

४१. नाटा, खाटा बेचि के चार धुरंधर लेहु,
आपन काम निकारिकै, औरहु मँगनी देहु।

४२. ताका भैंसा निठरा बैल,
नार कुलच्छन बालक छैल।
इनसे बाँचे चतुर लोग,
राज छोड़िके साधै जोग।

४३. जोते का पुरबी, लादे का दमोय;
हेंगा का काम दे, जो देवहा होय।

४४. छोटा मुँह औ' ऐंठा कान,
यही बैल की है पहचान।

४५. कान क छोटा, भवरे कान,
इन्हें छाँड़ि जनि लीजो आन।

४६. एक समय बदना का खेल, रहा अमर में चलत अकेल,
एक बटोही हर-हर किया, ठाढ़े गिरा होस ना रहा।

५. खाद

१. सन के डंठल खेत छिटावै,
तिनते लाभ चौगुना पावै।

२. वही किसानी में है पूरा,
जो छोड़ै हड्डी का चूरा।

३. जेकरे खेत पड़ा ना गोबर,
वहि किसान को जानो दूबर।

४. गोबर, राखी, पानी सड़ै, तब खेती में दाना पड़ै।

५. गोबर, चोकर, चकवर, रूसा।
इनको छोड़ै होय न भूसा।

६. खेती करै, खाद से भरै,
सौ मन कोठिला में वह धरै।

७. खाद पड़ै तो खेत, नहीं तो कूड़ा-रेत।

८. खाद असाढ़ खेत में डालै,
तब फिर खूबहि दाना पालै।

९. असाढ़ में खाद खेत में जाव,
तब भर मूठी दाना पावै।

१०. सनई बोवे, सनई काट, सनई सारे खेत मझार;
उलटे-पलटे दोनो जोतै, बदि दीजै गल्ला का भार।

११. जो तुम देवो नील की जूठी,
सब खादों में रहै अनूठी।

१२. जामे डालो गोबर-खाद,
तब देखो खेती का स्वाद।

१३. गोबर, मैला, नीम की खली,
या से खेती दूनी फली।

१४. खेतै पामा जब न छिपाना,
उसके घरै दरिद्र समाना।

१५. खादै-कूड़ा ना टरै, कर्म लिखा टर जाय,
रहिमन कहै बुझाय के, देखो पाँस बनाय।

१६. खाद देय तो होवे खेती,
नहीं तो रहे नदी की रेती।

१७. कुडहल राखो खाद पटाय,
तब धानों के बीज दिखाय।

१८. अबर खेत जो मुट्ठी खाय,
सड़े खूब तौ बहुत मोटाय।

६. बोआई

१. हस्त न बजरी, चित्र न चना,
स्वाति न गेहूँ, विशाख न घना।

२. सावन सावाँ, अगहन जौ,
जितना बोए, उतना लौ।

३. रोहिनी कोदौं मृगसिरा धान,
अद्रा जुन्हरी बोए किसान।

४. मकड़ा घासा पूरा जाला,
बीज चने का भर-भर डाला।

५. बोउत बनै तो बोआइयो,
नहीं बरी बरा कर खाइयो।

६. पुष्य-पुनर्वसु, बोवै धान, अश्लेखा कोदौं परमान।

७. दाना अरसी, बोया मलसी।

८. जौ छीछी गेहूँ मौंस लौं, मेंढक छप्पे ज्वार;
जिनके छीछी ऊख है, वे फिरते घर-बार।

९. छीछा सालिम मालरा, छिच्छी भली कपास;
जिनकी छिच्छी ऊख है, उनकी छाँड़ो आस।

१०. चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गेहूँ होय;

११. गाजर, गंजी, मूरी, इनको बोवै दूरी।

१२. कातिक बोवै, अगहन भरै,
    ताको हाकिम फिर का करै।

१३. कोठिला बैठी बोली जई,
    आधे अगहन काहे न बई।

१४. आगे गेहूँ, पाछे धान,
    उसको कहिए बड़ा किसान।

१५. अगाई, सो सगाई।

१६. अगहन बवा, कहूँ मन, कहूँ सवा।

१७. कुही, अमावस मूल बिन, रोहिनि बिन अखतीज;
    श्रवण सरवन ना मिले, वृथा बहोरो बीज।

१८. कोठी चढ़े पुकारे जई,
    खिचड़ी खाकर क्यों न बई।
    जो कहुँ बोते बिगहा चार,
    तो मैं डलती कोठिला फार।

१९. घनी-घनी जो सनई बोवै,
    तो सुतरी की आसा होवै।

२०. चित्रा गेहूँ, स्वाती भूसा,
    अनुराधा में नाज न भूसा।

२१. छीछी तो तोड़ी भली, छीछी भली कपास;
    जिनकी छीछी ऊखरी, उनकी छोड़ो आस।

२२. दिवाली को बोवै दिवलिया।

२३. नरसी गेहूँ, सरसी जौ, अति के बरसे चना बौ।

२४. हिरन फलागन काकड़ी, पैगे पैगे कपास;
जाय कहो किसान से, बोए घनी उखार।

२५. सन घना, बन बेगरा, मेंढक कूंपे ज्वार;
डग-डग पर हो बाजरा, करै दरिद्दर पार।

२६. मक्का, जोंधरी औ' बजरी, इनका बोवै कुछ बिररी।

२७. पूस न बोए, पीस खाए,

२८. भादौं चार और आश्विन चार,
आदि-अंत कह जोड़ विचार।
कहै घाघ केराव बोवनी,
कोठिला भरि के राखहु अपनी।

२६ अद्रा रेंड पुनर्वसु पाती,
लागे चिरैया दिया न बाती।

३०. अगहन बोवै जौवा, होय तो होय नहिं खावे कौवा।

३१. आगे की खेती आगे,
पीछे की खेती भागे जागे।

३२. आधी हथिया मूर मुराई,
आधी हथिया सरसों राई।

३३. क़दम-क़दम पर बाजरा, मेंढक कूदे ज्वार,
ऐसे जो बोए कोई, घर-घर भरे कोठार।

७. जोनाई

१. सौ बाहें मूर, पचास बाहें गूर,
पचीस बाहें जवा, जो चाहे सो लवा।

२. सौ चास न एक पास,

३. सगरी खेती जो हर गहा, आधी खेती जो सँग रहा;
जो पूछा हरवाही कहाँ, पोत-पसार गवा बस तहाँ।

४. माघ मघारै, जेठ में जारे,
भादों में मारे, तो मेहरी डेहरी पारे।

५. बाहें क्यों न असाढ़ एक बार,
अब क्यों बाहे बारम्बार।

६. नौ नसी, एक कसी,
नौ नाहन एक बाहन।

७. थोड़ा जोतै, बहुतै गावै, ऊँच न बाधे आड़;
ऊँचे पर खेती करै, पैदा होवे भाड़।

८. तेरह कातिक, तीन असाढ़,
जो चूका तो गया बजार।

९. जोते सेऊ पर घास न टूटे,
ताकर भाग साँझ ही फूटे।

१०. जोत गहराई धूरी उधिगाव,
घास-दूब कुछ रहन न पावै।
११. जोंधरी जोते तोड़ मगोर,
तो वह डारे कोठिला फोर।
१२. छोड़ै खाद जोत गहराई,
तब खेती का मज़ा दिखाई।
१३. खेत बेपनिया जोतो तब,
ऊपर कुआँ खुदाओ जब।
१४. कातिक मास रात हर जोतो,
टाँग पसार न घर में सूतो।
१५. उत्तम खेती आप सेती, मध्यम खेती भाई सेती;
नौकरी खेती बिगड़ गई, तो बलाय सेती।
१६. सौ तोड़ के करो पचास, करधै दे बरधै के घास;
खाले ऊँचे नावो चास, थोड़ के जोतो ढेर के घास।
१७. साते, पाँचे, तृतिया, दसमी, एकादसि में जीव;
इन तिथियन पर जोतहु, तौ प्रसन्न हो सीव।
१८. मेड़ बाँध दस जोतन दे, दस मन बिगहा मोसे ले।
१९. बीज पड़े फल अच्छा देत,
जितना गहरा जोते खेत।
२०. बाली मोटी भइ काहें, असाढ़ के दो बाहें।
२१. दस बाहों का माड़ा, बीस बाहों का गाड़ा।

२२. तोड़ दीन्ह क्यारी, खेत कां उजारी।

२३. जो हल जोते खेती वाकी,
  और नहीं तो जाकी-ताकी।

४. जोत न माने अरमी चना,
  कहा न माने हरामी जना।

२५. जो ढेले दे तोड़-मरोर,
  ताको कोठिला दूँगी बोर।

२६. जिस घर साले सारथी, तिरिया की दो सीख;
  सावन में बिन हल लवै तीनो माँगैं भीख।

२७. गदिरन जोते बोवे धान, सो घर कोठिला भरे किसान;
  गेहूँ बाहा, धान गाहा, ऊख गुड़ाई से है आहा।

२८. काह होय बहु बाहें, जोता न जाय थाहें।

२९. कच्चा खेत न जोते कोई,
  नाहीं बीज न अँकुरे कोई।

३० असाढ़ जोतैं लड़के-बारे, सावन-भादों में हरवाहे;
  कुआँर में जोतै घर का बेटा, तब ऊँचे होनहारे।

---

८. फ़सलें

१. तरकारी है तरकारी, यामें पानी की अधिकारी।

२. आलू बोवै अँधेरे पाख, खेत में डारे कूड़ा-राख।
समय-समय पर करै सिंचाई, दूना आलू घर में आई।

३. सरसे अरसी, निरसे चना।

४. माह उजाली तीज को, बादल बिजली देख;
गेहूँ जो संचित करो, मँहगो होवै पेख।

५. बोवो गेहूँ काट कपास, फिर होवै ना ढेला-घास।

६. नीचे ओद उपर बदराई, घाघ कहें गेरुई अब खाई।

७. जो तेरे कुनवा घना, तो क्यों न बोवै चना।

८. जब सैल खटाखट बाजे, तब चना खूब ही गाजे।

९. चैत में हुई फ़सल तैयार, काट-दायँ के लाओ यार,
बेर किए होवे नुकसान, बेर में नाहीं भला किसान।

१०. चैना जी का लेना, सोलह पानी देना;
एक बयार बहै पुरवाई, लेना है ना देना।

११. चना में सर्दी अधिक समाई,
ताको जान गदहिला खाई।

१२. चना अधपक, जौ पका काटे,
गेहूँ बाली लटका काटे।

१३. गेहूँ भवा काहें, असाढ़ के दो बाहें।

१४. गेहूँ-जौ जब पछिवाँ पावे,
तब जल्दी से दायाँ जावे।

१५. गेहूँ गवा काहें, कातिक के चौबाहें।

१६. ख़ूब जोते औ' नावै खाद,
तब देखे गेहूँ का स्वाद।

१७. क़दम-क़दम पीपल मुक़दम,
गेहूँ ठाकुर जौ दीवान।
अरहर चेरी, चना ग़ुलाम,
सरसों ठाढ़े करे सलाम।

१८. मृगसिर में बोए चेना,
ज़मींदार को कुछ नहिं देना।

१९. मयरे गेहूँ, टेले चना।

२०. दो दिन पछिवाँ, छः पुरवाई,
गेहूँ जौ को लेव दँवाई।
ताके बाद ओसावै सोई,
भूसा दाना अलगे होई।

२१. जो कपास को नाहीं गोड़ी; वहिके हाथ न लागै कौड़ी।

२२. जब बर्र बरोठे आई, तब रबी कि होय बोवाई।

२३. चैना है मोर जी का लेना; सोलह पानी देना;
अस्सी-अस्सी का बैल मरत है, बालम मरे नगीना।

२४. चना सींच पर जब हो आवै,
ताको पहले तुरत खुटावै।

२५. चना चैत घना।

२६. गेहूँ भवा काहें, सोरह बाहें नौ गाज थाहें।

२७. गेहूँ बाहे से, चना पलोए से, धान गाहे से,
मक्की निराए से, ऊख कसाए से।

२८. गेहूँ गेरवी, गाँधी धान,
बिना अन्न के मरा किसान।

२९. गेहूँ आए बाल, खेत बनाओ ताल।

३०. कपास चुनै, खेत खनै।

३१. अनाज होय बहु काहें, जो चौमास जोते ठाहें।

३२. लागा बसंत, ऊख पकत।

३३. बाड़ी में बाड़ी करै, करै ईख में ईख,
वे घर यों ही जाएँगे, सुनैं पराई सीख।

३४. धान, पान, उखेग,
ये तीनो पानी के चेग।

३५. जो तू भूखा माल का,
तो ऊख कर लो नाल का।

३६. जेकरे ऊखर लगी लवाही,
तेहि पर आवै बड़ी तबाही।

३७. मरब तो कर ले गोंड़ ,
  औ' पेरे उसको गोंड़ ।

३८. ऊख गोड़ के तुरते गावै ,
  तो फिर ऊख बहुत सुख पावै ।

३९. ऊख कचाई काहे से ,
  स्वाती पानी पाए से ।

४०. या तो बोवो कपास औ' ईख ,
  नाहीं माँग के खाओ भीख ।

४१. प्रीति जो कीजै ऊख से जामे रस की खानि ,
  जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं , यही प्रीति की बानि ।

४२. तीन क्यारी, तेरह गोड़ ,
  देखो ऊख तब भुइं तोड़ ।

४३. जेठ में जरै, माघ में टरै ,
  तब जीभी पर रोड़ा परै ।

४४. खेती करै ऊख-कपास, घर करे व्यवहरिया पास ।

४५. ऊख तक खेती , हाथी तक बनिज ।

४६. ऊख करै सब कोई , जा बीच में जेठ न होई ।

४७. हथिया में हाथ गोड़, चित्रा में फूल ,
  चढ़ते स्वाती झंपा झूल ।

४८. सात स्वाती , धान उपार ।

४९. साढ़ी में साठी बोवै, बाढ़ी में बाढ़ी;
ऊख में जो धान बोवें, फूँको वाकी दाढ़ी।

५०. सवाँ किसानी हेठी, अगहनिया पानी जेठी।

५१. बिधि का लिखा न होई आन,
आधे चित्रा फूटे धान।

५२. रोहिनि बरसे, मृग तपे, कुछ-कुछ अद्रा जाय,
कहै घाघ घाघिन से, स्वान भात नहिं खाय।

५३. मघा सुरेखा लागा जोर,
उर्द, मूँग, तिल धरा बहोर।

५४. बेहन बढ़े काहें, मई के कुछ बाहें।

५५. पुक्ख पुनरबस बोवै धान,
असलेखा जुँधरी परमान।

५६. धान-पान औ खीरा, ये पानी के कीरा।

५७. तिल कोरें, उर्द बिलोरें।

५८. चितरा गेहूँ, अदरा धान,
न उनके गेरुई, न उनके घाम।

५९. गेहूँ गेरुई, चर का धान,
बिना अन्न के मरा किसान।

६०. खुरचप जुँडा, पतर को धान,
उर्द, मूँग, तिल धूर उड़ान।

६१. काले फूल न आया पानी,
धान मरा अधबीच जवानी।

६२. ऊँचे चढ़के बोला मडुआ,
सब नाजों का मैं हूँ भँडुआ।

६३. उठके बजरा यों हँस बोले,
खाए बूढ़ युवा हो जावे।

६४. अगहन में सरवा-भर, फिर करवा-भर।

६५. सावन सूखे धान, भादों सूखे गेहूँ।

६६. साठी होवे साठ दिना,
जब पानी बरसे रात-दिना।

६७. साठी पके साठवें दिन,
जो पानी पावै आठवें दिन।

६८. श्रावण की एकादशी, गरमैं उठे जो भान,
संवत सुख लौं होत है, उपजैं सातों धान।

६९. लगत पुनर्वसु बइए धान,
अधनउआँ खेती करे किसान।

७०. रोहिन मृगसिर जो बोवै मका,
उर्द मडुवा नहिं आवे इका।

७१. गेहूँ गिरे अभागे का, धान गिरे सुभागे का।

७२. गेहूँ बाहे, धान बिदाहे।

७३. जो ठाने खेती का ठान,
अगम जुंडी, पच्छिम धान।

७४. सभी अषाढ़ी कृष्णा को मंगल रोहिनि होय,
सस्ता धान बिकायगो, हाथ न छुइहै कोय।

७५. पहले काकड़ि, पाछे धान,
उनको कहिए पूरा किसान।

७६. बुद्ध-बृहस्पति दोउ भले, शुक्र न भले बखान,
रवि-मंगल बौनी करै, द्वार न आवै धान।

७७. बोवै बजरा आए पुक्ख,
फिर मन कैसे भागे सुक्ख।

७८. कुइहल भदई बोवो यार,
तब चिउरा की होय बहार।

७९. ऊख मरौती, दिवरा धान,
इन्हें छाँड़ि जने बोवो आन।

८०. उर्द - मोथी की खेती करियो,
कुरिया तोड़ उपर में धरियो।

८१. आस-पास रबी, बीच में खरीफ,
लोन-मिर्च डालके खा गया हरीफ।

८२. अद्रा धान, पुनर्वस पैया,
गए किसान जब बई तिरैया।

६. कौन बीज कितना बोया जाता है

१. पाँच पसेरी बिगहा धान,
तीन पसेरी जड़हन मान।

२. सवा सेर बिगहा सावाँ जान,
तिल्ली-सरसों अँजुरी मान।

३. जौ-गेहूँ बोए पाँच पसेर,
मटर की बीघा तीसे सेर।

४. दो सेर मोथी, अरहर, मास,
डेढ़ सेर बीघा बीज कपास।

५. बर्रें को दो सेर बो आव,
डेढ़ सेर बीघ तीसी नाव।

६. बोवै चना पसेरी तीन,
सेर तीन की जुँधरी कीन।

७. डेढ़ सेर बजरा, बजरी, सावाँ,
कोदो, ककुन सवैया बवा।

८. यहि विधि से जब बवै किसान,
दूना लाभ खेत में जान।

१०. फुटकर कहावतें

१. है उत्तम खेती वाकी,
होय मेवाती गोई जाकी।

२. हँसना बाम्हन, खँसना चार,
कहैं घाघ यह विपतिक ओर।

३. सोम, सुक्र, सनीचरी, पूस अमावस होय,
घर-घर होय बधावरी, बुरा न माने कोय।

४. सोंख कहैं देख मोर कना,
बे मेहरी का करु घरा।

५. सावन - भादों खेत निरावै,
तब गृहस्थ बहुत सुख पावै।

६. सावन बदी एकादसी, बादल ऊगै सूर,
तो बतावैं भड्डरी, घर - घर बाजै तूर।

७. सावन ने मारे लीटक पेटा,
अब देखें कया खाओ बेटा।

८. सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूल,
परिवा तपै जो जेठ की, उपजैं सातों तूल।

९. सब कर, हर के तर।

१० रेंड़हे गेहूँ कुसहे धान,
गड़रा की जड़ जड़हन जान।
फूली घास रौंदे किसान,
उसमें होय आन का तान।

११. मोटे की मघर पतगोना की झार,
पँडुवा की झील, नदिया को कछार।

१२. मुवे चाम से चाम कटावैं, भुइँ सँकरी में सोवैं,
कहैं घाघ यह तीनो मकुवा, उढ़रि जायँ औ' रोवैं।

१३. माघ-मास जो पड़े न सीत,
महँगा नाज जानिया मीत।

१४. माघ पूस की बादरी और क्वार को घाम,
जेठ दुपहरी बराय के करो पराया काम।

१५. माघन बई, असाढ़ न गाड़ी,
का करै बराह निगाड़ी।

१६. मग्घा मकड़ी, पुर्वी डाँस,
उतरा में है सबकी नास।

१७. मघा भुभ्भ्म अघा।

१८. मंगल-सोम होय सिवराती,
पछिवाँ वाय बहै दिन-राती।
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ै,
राजा मरै कि परती पड़ै।

१९. भैंस कंदेलिया पिय लाए,
मांगे दूध कहाँ से आए।

२०. भुइँ भइ काली काहे, जीव अंश अधिकाहे।

२१. बुध बोती, सुक लावनी।

२२. बाम्हन, कुत्ता, हाथी, जाति क जाति न साथी,
कायथ कौवा, गोड़, तीनो जाति बटोर।

२३. बाह न कोनो मोटा, बीज बतावे खोटा।

२४. बाँधे कुदारी खुरपी हाथ,
लाठी - हँसिया राखे माथ।
काटे घास, निरावे खेत,
पुरा किसान वहीं कह देत।

२५. बहु सोना बहु कटियाना,
औ' बहुतै बोया चना।
कहै मनोहर जंगाना,
जावेंगे यह तीनो जना।

२६. बनिया क सुवग्न ठकुर क हीन,
वैद्य क लड़िका व्याधि न चीह्न।
पंडित चुप्पा, बेसवा मइल,
कहे घाघ पाँचों घर गइल।

२७. पाँच सनीचर, पाँच रवि,
पाँच जो मंगल होय।

छतर टूट धरनी पड़े,
की अन महँगा होय।

२८. परिवा सादों मो तीन दिन,
जो होवे सोमवार।
घर-घर होय बधाई,
घर-घर मंगलचार।

२९. नितहिं खेती, दुसरे गाय,
जो नहिं देखे तेकर जाय।
घर बइठल जे बनवे बात,
देह में वस्त्र न पेट में भात।

३०. न होय करम लिखा पूर,
पर न टरै खेत का घूर।

३१. दो हर खेती, एक हर बारी,
एक बैल से भली कुदारी।

३२. दो जोई, घर खोई।

३३. दूर गुड़सा, दूर पानी,
नियर गुड़सा नियर पानी।

३४. तुलसी रामहिं यों भजो,
ज्यों किसान की रीति।
दाम चौगुने ऋण घनो,
तौहु खेत सों प्रीति।

३५. ढोकी बोने जाय अकाम,
देखी ठठरै उड़ै अकाम।

३६. जेके घर में नार करकशा,
वह नर बिना मौत मर जाय।

३७. जिन वारो रवि संक्रांत,
लिए अमावस होय।
खप्पर हाथों जग फिरै,
भीख न पावै कोय।

३८. जब देखा गिर पांति थाड़ा,
बिरहा गाय बिपाउर घोड़ी।

३९. छंदर कहै मैं आऊँ-जाऊँ, भडुर कहै गुरैएँ खाऊँ,
नौदर कहै नौदिपि हो धाऊँ, पितु-कुटुंब पुरोहित खाऊँ।

४०. चना पहिरे हरु जाते औ' बोझ धरे अठिलायँ,
घाघ कहैं ई तीनिउ भकुआ, पाँमत पान चबायँ।

४१. घर की खुनस औ' जर की भूख,
छोट दमाद, बराहें ऊख।
पातर खेती भकुआ भाई,
घाघ कहैं दुख कहाँ समाई।

४२. खेती-बारी, चाकरी औ' घोड़े की तंग,
अपने हाथ सँवारिए, तब जिउ रहे अनंद।

४३. खेती करे अधिया, न बैल मरे न बधिया।

४४. खन के काटे, घन के पिराये।

४५. कुदई, तमाखू, मावनी, और है मनभावनी।

४६. कामिन गरम औ' खेती पक्की,
ये दोनो हैं दुर्बल बद्दी।

४७. काँटा बुरा करील का, औ' बदरी का घाम,
सौत बुरी है चून की, औ' साझे का काम।

४८. करमहीन खेती करै, पाला पड़ै कि आना गिरै।

४९. ऐराए धरै आए तऊ, पुराने आदे खाना पाए।

५०. एक माम ऋतु आगे धावै,
आधा जेठ असाढ़ कहावै।

५१. उधार काढ़ि व्यवहार चलावैं, छप्पर डारैं तारो;
सारे के सँग बहिना पठवैं, तनिउ का मुँह कारो।

५२. इतवार करे धनवंतरि होय,
सोम करे सेवा फल होय।
बुध, बीफै, शुक्र भरै बखार,
सनि-मंगल बीज न आवै द्वार।

५३. आए मेघ हरी न ये देख,
आए मेघ हरी-हरी देख।

५४. असौज बदी अमावस, जो आवै शनिवार,
समय होइ है फिर बुरो, जोसी करौ विचार।

५५. अति ऊँचे भुइँ धरन पै, भुजगन के अस्थान,
तुलसी अत नीचे सरद, ऊख, अन्न औ' पान।

५६. अगपर खेती, अगपर मार,
घाघ कहैं ये कबहुँ न हार।

५७. खेत होय गोंइड़े, हर होयँ चार,
घर होय गिहथिन, गऊ म वियार।
अन्न में गेहूँ, धन में गाय,
अगल-बगल बैठे दो भाय।
हंस के अंडा अस दधि होय,
बाँके नैन परोसे जोय।
रहरी क पहिती, जड़हन के भात,
गलगल निबुआ औ' घिउ तात।
ऊँचा अटारी बहै बतास,
घाघ कहैं घर ही कैलास।

५८. हला जु लगा पताल, तो टूट गया काल।

५९. स्वाती आए, धान पकाए।

६०. सावन-भादों कुहरा आए,
माह-पूस में पाला खाए।

६१. सावन घोड़ी, भादों गाय,
माघ मास जो भैंस बियाय।

कहे घाघ यह साँची बात,
आपै मरे कि मलिकै खात।

६२. ससि उगत औ' मंगल, पूस अमावस होय;
दुगुना, तिगुना, चौगुना, नाज महँगा होय।

६३. सब प्रकार हर बरतै, जो खसम मीर पर।

६४. सदा न बाना बुलबुल बोले, सदा न बाग बहारौं,
सदा न जवानी रहती यारो, सदा न सोहबत यारौं।

६५. रूँध बाँध के फाग दिखाए,
सो किसान मोरे मन भाए।

६६. मूल गल्यो, रोहिनी गली, अद्रा बाजी वाय,
हाली बेचो बछिया, खेती लाभ न माय।

६७. मीन सनीचर, कर्क गुरु, जो अउवल मंगल होय,
गेहूँ गोरसहिं गुड़ारी, बिरले बिलसे कोय।

६८. माघ मास की बादरी और क्वार का घाम,
ये दोनो जो कोऊ सहै, करै पराया काम।

६९. माघ परोरा झड़ करै, सावन करै उघार।

७०. मरद निकोनी बरधे दाय, दुबरी चलने में दुख पाय।

७१. मंगलवार पड़े दिवारी,
हँसे किसान, रोवै व्योपारी।

७२. भुरी भैंसिया चाँदी जोर,
अधन महावर जब कब होय।

७३. भली जाति कुरमिन की खुरपी हाथ,
अपना खेत निरावे पिय के साथ।

७४. बिरले जोत पुराने, बीआ,
ताकी खेती कुछ नहिं हुआ।

७५. बाह न जाने मसुरी-चना,
दिन न जाने हरामी जना।

७६. चार छवे छः निराबैं, तीन खाट, दो बाट।

७७. बाढ़े पुत्र पिता के धरमा;
खेती उपजै अपने करमा।

७८. बबुर का पाटा, सिरस का हर, हरियानी का बैल,
छूँछे हाथे लेय का, बैठे चौरस खल।

७९. पुक्ख-पुनर्बस बोवै धान, अश्लेषा जुँधरी परमान,
मघ मसीनो बोवै रेल, तब दोजै परहल में ढेल।

८०. पहले छायो तीन घर, मार, भुमौला औ' बड़हरा।

८१. पर हथ बनिज, संदेसे खेती, बेवर देखे ब्याहे बेटी,
द्वार पराए गाड़े थाती, ये चारों मिल पीटैं छाती।

८२. ना अति बरखा, ना अति धूप,
ना अति बकता, ना अति चूप।

८३. लड़का ठाकुर बूढ़ देवान,
कजिया बिगड़े साँझ बिहान।

८४. दो पत्ती क्यों न निराए,
अब बीनत क्यों पछिताए।

८५. दो आश्विन, दो भादों, दो असाढ़ के माह,
सोना-चाँदी बेचकर नाज बिसाहो नाह।

८६. दस हर राव, आठ हर राना,
चार हरों का बड़ा किसाना।

८७. तीन पाख दो पानी, आई कुटक देवरानी।

८८. ठाढ़ी खेती गाभिन गाय,
तब जानो जब मुँह में आय।

८९. जब निकले लंका का राव,
धेनु दूध न बैलों चाव।

९०. छोटी नसी, धरती हँसी।

९१. चितरा, स्वाति, बिसाखहीं सावन ना बरसंत,
हाली अन्नै सग्रहौ, दूनो मूल करंत।

९२. अगहन में नाहीं थी कोर,
तेरे बैल क्या ले गए चोर।

९३. असाढ़ मास जो घूमा कीन,
ताकी खेती होवै हीन।

९४. अहिर मिताई, बादर छाहीं,
होवै-होवै नाहीं-नाहीं।

९५. आलस-नींद किसानै नासै,
चोरै नासै खाँसी।
अँखिया लिरबिर वेसवै नासै,
तिरमिर नासै पासी।

९६. उत्तम खेती, मध्यम बान,
अधम चाकरी, भीख निदान।

९७. एक पाख दो गहना,
राजा मरै की शहना।

९८. एक हर हत्या, दो हर काज,
तीन हर खेती, चार हर राज।

९९. कमती करै गाजा बाजा,
जौने लागे तौने राजा।

१००. कर्क बुआवै काकरी, सिंह अबोनो जाय,
ऐसा बोले भड्डरी, कीड़ा फिर-फिर खाय।

१०१. कासै कोदौं, दूबै जौ,
टूड़ काटि कै मूँगहि बौ।

१०२. कुंभ आवे, मीने जाय,
पेड़ी लागे पालव खाय।

१०३. खेत बेपानी, बुड्ढ़ा बैल,
सो गिरहस्त साँझे घर गैल।

१०४. खेती करै साँझ घर सोवै,
काटै चोर हाथ धर रोवै।

१०५. गया पेड़ जब बकुला बैठा,
गया गेह जब भुड़िया पैठा।
गया राज जहँ राजा लोभी,
गया खेत जहँ जामा गोभी।

१०६. घर घोड़ा, पैदल चलै, तीर चलावै बीन,
थाती धरै दमाद घर, जग में भकुवा तीन।

कठिन शब्दों के अर्थ

१—वर्षा

शाली = चावल ।

मास = उर्द ।

अघा = तृप्त होना, ज्यादा वर्षा ।

भान = सूर्य ।

मोरा = मार बोलै ।

रिरिय य=प्रसन्न होना ।

बंगार्गो=पूर्व की ओर ।

पूनो=पूर्णमासी ।

रोरा=आवाज ।

असार=लगातार ।

अलसेठ = कष्ट ।

पुरुवाइयो = प्रतिपदा ।

भिन-भिन = कुछ-कुछ, छिट-कुट ।

स्वल्प = थोड़ा ।

२—वायु

पुरुवा = पूर्व में ।

ब्यार = हवा ।

पितुमार = नैहर ।

तुसार = पाला ।

माहा = एक प्रकार का कीड़ा ।

आँधाभोर = बड़े जोर से ।

गेरुई = गेहूँ का एक रोग ।

३—अकाल

काकला = कौआ ।

चंदर = चंद्रमा ।

भद्दर-भद्दर = जोर जोर से ।

पौन = हवा ।

निरधार = निश्चय ।

बारे = बच्चे ।

हड़हवा = नैऋत्य कोण ।

चकखम = गर्मी ।

पदुर्भो = पृथ्वी ।

४—बैल

अमहा = आँख का रोगी बैल ।

गादर = लीचड़ ।

जाय = बिगड़ जाता है ।

बगोदा = पालतू।
निरघिन जोय = बदसूरत स्त्री।
मुसरहा = झुके हुए कंधोंवाला।
परहर = काले कधे, नीले खुवाला बैल।
कोवी = पेट।
फुनवा = सफेद धब्बेवाला।
महुआ = महुए के रंग का।
बरारी = लंबा निशान।
संथर = समथल।
बधिया = नपुंसक बैल।
तरकना = छपटनेवाला।
बौखड़ = सुंदर शरीरवाला।
रतौ = प्रसन्न होना।
घोंचो = मुंडे सींगवाला।
गोई = जोड़ी।
तरियान = नीचे झुकी हुई।
नटिया = नाटा।
नाभा = कोढ़ी।
निठरा = निठल्ला।

५—खाद

झार = समूह।
जूठी = गुम्भी।
पाँस = खाद।
कुड़हल = जोती हुई जमीन।
अबर = कमजोर।

६—बोआई

चित्र = चित्रा नक्षत्र।
खजसी = पास पास।
दाना = पोश्ता।
छुप्पे = कूदना।
अगाई = समय से पहले।
मूलवित = जो मूल नक्षत्र में न हो।
सरवन = श्रवण नक्षत्र।
खिचड़ी = मकर संक्रांत।
तोड़ी = एक तरह की सरसों।
बन = कपास।
बेगरा = दूर-दूर।
बिररी = दूर-दूर।
चिरैया = एक नक्षत्र।

७—जोताई

मून = मूली।
गूर = गुड़।
नसी = थोड़ी जुताई।
कसगी = गहरी जुताई।
सेऊ = फिर भी।

बाहें = जोत।
दो बहारें = फ़सल।

८—फ़सलें

ओद = गीला।
कुनबा = कुटुंब।
लटका = लटकने लगना।
मयदे = मयदे की तरह।
कसाना = सींचना।
दलना = खोंटना।
गाहना = मथना, खेत में काफ़ी पानी होना।
बाड़ी = कपास के कपास का बोना।
लबाही = एक कीड़ा।
ऊखर = ईख।
झंपा = पूरी तरह से फूलना।
श्वान = कुत्ता।
जुंडी = जोन्हरी।
सरवा = स्रुवा।
हरीफ = दुश्मन।

९—बीज

मास = उर्द।
बवै = बोए।

१०—फुटकर

मेवाती = मेवाती बैल।
सोंख = एक तरह का बैल।
सूर = सूरज।
रैड़ है = रेंड।
सावाज = उदार।
गुड़सा = एक कीड़ा।
छदर = छ दाँत का बैल।
सद्दर = सात दाँतवाला।
नौदर = नौ दाँतवाला।
चन्ना = लँगोट।
महावट = चपा।
नाह = नाथ।
लिरबिर = मैल।
तिरमिर = कानोट आँख।
मुड़िया = जिसका सिर मुड़ा हो।
कुंभ = कीड़ों का उपद्रव।